

— सह *mitnehmen*: न च तौ सहनयात् Kathis. 15, 88.

ग्रम् (von ग्रम्) m. das Besitzergreifen (nach Nir. 3, 3): नृक् ग्रम्पारणः सुशेवः RV. 7, 4, 8. Möglich ist auch: der Besitzergreifende.

ग्रमण (wie eben) n. das Fassen oder woran man Etwas fasst; s. अग्रमण und das folg. Wort.

ग्रमणवत् (von ग्रमण) adj. was einen Anhalt hat: आदस्यापुर्ग्रमणवद्दीकुशर्म न सूनवे RV. 1, 127, 5.

ग्रमीतर (von ग्रम्) nom. ag. Ergreifer AV. 1, 12, 2. — Vgl. ग्रहीतर.

1. ग्रस्, ग्रसति und ० ते Dhātup. 16, 29. 33, 76; ग्रसिष्यति; अग्रसीत्; ved. जग्रसीत्, जग्रसान्; ग्रसितं ved. und ग्रस्त klass. (= भुक्त AK. 3, 2, 60. Taik. 3, 3, 156. H. an. 2, 165. Med. I. 14) P. 7, 2, 34. in den Mund nehmen, im Rachen bergen, verschlingen, verzehren, aufzehren (eig. und übertr.); ganz in sich aufnehmen, verschwinden machen: ग्रसतामश्वा विमुचि शोणा RV. 3, 35, 3. TS. 3, 4, 2, 1. Çat. Br. 1, 6, 4, 19. 7, 1, 4, 40. सिन्धूरकिना जग्रसान् RV. 4, 17, 1. 10, 111, 9. यच्छसतो जग्रसाना (act.) अराविपुः (प्रावणः) 94, 6. जरा चिन्मे निर्गतिर्ग्रसीत् 5, 41, 17. ग्रसिताममुद्यतम् (वर्तिकां) 10, 39, 13. 1, 112, 6. TS. 6, 1, 9, 1. Çat. Br. 3, 3, 2, 8, 4, 8. — सा ग्रस्यमाना प्राक्णा mit dem Maule gepackt MBu. 3, 2383. fg. ग्रसिष्ये भक्षिष्ये R. 5, 56, 16. Bṛāg. P. 1, 13, 43. यावतो ग्रसते ग्रसान् MBu. 3, 133. 12, 6671. 6673. मत्स्याग्रसते मत्स्याश्च 3, 13829. ग्रस्तामिषे मीनम् Pañ-kāt. I, 208. IV, 23 = 79 = MBu. 5, 1107 (wo ग्रस्यं st. शस्यं und ग्रसं). पं मत्स्यो ग्रसेत् Suçr. 1, 110, 9. लेलिह्यसे ग्रसमानः समताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः Bhāg. 11, 30. भवत्तमाशापिशाची बलात्सर्वग्रसम् (absolut.) इयं ग्रसिष्यति Prab. 76, 19. 77, 8. नम ग्रावत्य वाङ्मयां ग्रसमानमिवास्वरम् R. 5, 3, 56. ग्रसमानमनीकानि व्यादितास्यमिवात्तकम् MBu. 6, 2802. R. 6, 18, 35. दावेतौ ग्रसते भूमिः सर्वौ विलशयानिव 2, 1958. ग्रसमानो वसुंधरम् R. 5, 27, 10. (अग्निः) य इमां पृथिवीं कृत्स्नां संलिय्य ग्रसते पुनः MBu. 3, 2168. 6098. सृजत्यदः पासि पुनर्ग्रसिष्यसे यद्योर्णानभिः स्वशक्तिभिः (vgl. Mund. Up. 1, 1, 7) Bṛāg. P. 3, 21, 19. तमो ग्रस (Burnouf: तमोग्रस) 5, 18, 8. तेषां कालो जग्रसील्लोकान् यशः 8, 20, 8. धर्मो हि ग्रसते पतनसुराणाम्, धर्मो वै ग्रसते जधर्मम् R. 6, 11, 16. 17. न विधिं ग्रसते प्रज्ञा प्रज्ञा तु ग्रसते विधिः MBu. 1, 4567. यथा नो न ग्रसेयुस्ते सपुत्रबलबान्धवान् 7395. यो मे धनमशतिपीतुर्भूमिर्ग्रस्तमाकृवे 4, 2252. सर्वार्थं ग्रसते बन्धुः Hit. II, 93. न च प्रापितमन्येन ग्रसेदर्थं कथं च न unterschlagen (?) M. 8, 43. अयं ग्रस्तवारङ्गं समवपीड्य eine Geschwulst, welche den fremden in den Leib eingedrungenen Körper ganz umschliesst Suçr. 1, 101, 1. तमसा ग्रस्ताः MBu. 13, 7292. R. 4, 50, 11. दीर्घतीव्रामग्रस्तं Jāñ. 3, 245. Rāga-Tar. 5, 123. Pañ-kāt. 224, 15. शोक ० 55, 2. चित्ता ० V. 11. जरा ग्रस्तः Bṛāg. P. 1, 13, 20. abgeschossene Pfeile verzehren so v. a. als auf eine magische Weise auf-fangen und verschwinden machen MBu. 3, 1597. Arā. 3, 34. R. 1, 56, 13. 16. 17. Sonne und Mond sind von Rāhu verschlungen, wenn sie verfinstert sind: ग्रसत्यग्रापि चैव तौ MBu. 1, 1166. राहुग्रस्तनिशाकरा (निशा) 3, 2667. R. 2, 42, 12. Bhārtr. 2, 27. Mākh. 148, 16. Varāh. Brh. S. 4, 28. 5, 7, 27. fgg. ad Hit. I, 17. Çṛṅgārāt. 6. AK. 1, 1, 2, 3. Trik. 3, 3, 56. चित्रानिव ग्रस्यस्ताम् R. 5, 18, 14. ग्रस्यस्त von einem Dämon besessen Daçak. 119, 9. अशाग्रस्यस्त Hit. II, 22. Buchstaben, Silben verschlucken: नो ग्रसेत्पूर्वमनर्म् Çikshā 27. जिह्वामूलविग्रहे ग्रस्तमेतत् RV. Pañt. 14, 3. Çikshā 35. Lāṭj. 6, 10, 18. सर्व उष्माणां जग्रस्ताः (वक्तव्याः) Kuṇḍ.

II. Theil.

Ur. 2, 22, 5. AK. 1, 1, 5, 20. Trik. 3, 3, 156. H. 266. H. an. 2, 165. Med. I. 14. — caus. ग्रसयति 1) fressen lassen Çat. Br. 12, 4, 4, 12. Kāṭj. Ça. 25, 1, 18. — 2) = simpl. Dhātup. 33, 76.

— अग्नि, partic. अग्निस्त zur Erkl. von अग्निपत्र AK. 3, 4, 28, 131.

— आ, partic. आग्रस्त eingebohrt Cit. beim Sch. zu Kāṭj. Ça. 4, 8, 26.

— उप = simpl.: राहुश्चार्कमुपाग्रसत् und eine Sonnenfinsternis fand Statt MBu. 2, 2693. — Vgl. औपग्रस्तिक.

— प्र dass.: तद्विषम्। प्राग्रसल्लोकार्त्तार्थं ब्रह्मणो वचनाच्छिवः॥ MBu. 1, 1153.

— सम् dass.: यावन्न — पिण्डो विषस्येव हरेण भीष्मः। संग्रस्यते ऽसौ (रावणः) पुरुषाधिपेन Bhāṭṭ. 12, 4.

2. ग्रस् adj. am Ende eines comp. in den Mund nehmend, verschlingend: पिण्ड ० P. 6, 4, 14, Sch.

ग्रसन (von ग्रस्) n. 1) das Verschlingen Suçr. 2, 267, 13. — 2) eine best. Art von partieller Verfinsternung des Mondes oder der Sonne: ग्रसनमिति यदा व्यंशः पादो वा गृह्यते ऽथ वाप्यर्धम् Varāh. Brh. S. 5, 46, 43. — 3) Rachen: प्राणित्रमास्ये ग्रसने ग्रहास्तु ते Bṛāg. P. 3, 13, 35.

ग्रसिष्ठ (superl. zu ग्रस्तर) adj. am meisten verschlingend: आदिद्रसिष्ठ ओषधोरजिगः RV. 1, 163, 7.

ग्रसिष्ठु (von ग्रस्) adj. zu verschlingen —, wieder in sich aufzuneh-men pflegend: भूतभर्तृ च तस्तेषां ग्रसिष्ठु प्रभविष्ठु च Bhāg. 13, 16.

ग्रस्तर (wie eben) nom. ag. Verschlinger: (राहुम्) ग्रस्तारं चैव चन्द्रस्य सूर्यस्य च Hariv. 12465.

ग्रस्ति (wie eben) f. der Act des Verschlingens Prab. 103, 12.

ग्रस्य (wie eben) adj. zu verschlingen, verschlingbar MBu. 5, 1107.

ग्रह s. ग्रम्.

ग्रह (von ग्रह) P. 3, 3, 58. gāṇa व्यादि zu 6, 1, 203. 1) adj. am Ende eines comp. P. 3, 2, 9, Vārt. a) ergreifend, anfassend, haltend: तत्पद-ग्रहावपतताम् Bṛāg. P. 3, 15, 35. Vgl. अङ्गुष्ठग्रह, धनुर्ग्रह u. s. w. — b) einsammelnd, zusammenscharrend: पूर्णं पालग्रहाः Bṛāg. P. 8, 6, 23. वित्त ०, शमल ० 5, 26, 36. — 2) m. a) nom. ag. Ergreifer u. s. w.: a) von den Mächten, welche vorübergehend Sonne und Mond angreifen in den Eklipsen; insbes. von Rāhu; dann heissen auch überhaupt die Planeten so, weil sie den Menschen magisch ergreifen. AK. 3, 4, 21, 238. H. 107. H. an. 2, 597. Med. h. 3. मरुत्त्वामिव संश्लिष्टौ ग्रहाभ्यां चन्द्रभास्कोः R. 5, 73, 48. शशिदिवाकर्योर्ग्रहपीडनम् Bhārtr. 2, 87. ग्रहकुलुषेन्दु Mil-lay. 74. Rāgh. 12, 28. अश्वधावत संक्रुद्धः खे ग्रहो रौहिणीमिव R. 6, 72, 43, 39. चित्रामिव ग्रह्यस्ताम् 5, 18, 14. नतत्रग्रहपीडनात् 73, 59. सिद्धिका ग्रहमाता Hariv. 11333. नतत्राणि ग्रहास्तथा M. 1, 24, 7, 121. चन्द्रादित्यौ ग्रहास्तारा नतत्राणि MBu. 1, 7677. R. 3, 5, 4, 10. Suçr. 1, 21, 16. 118, 21. ग्रहा न विपरीतास्तु MBu. 3, 2555. शुक्रो ग्रहः 1, 2606. श्वेतो ग्रहः 5, 1376. 6, 79, 83. Hariv. 11123. लोहिताङ्ग इव ग्रहः R. 3, 31, 5. नीणपुण्य इव ग्रहः MBu. 3, 842. Bald werden fünf (Mars, Mercur, Jupiter, Venus u. Saturni), bald sieben (die vorigen nebst Rāhu u. Ketu, dem auf- und niedersteigenden Knoten), bald neun Planeten (die vorigen nebst Sonne und Mond) erwähnt. रान्तं दुद्रुवुः सव्ये ग्रहाः पञ्च रविं यथा MBu. 6, 4566. (पीडितः) यथा युगनये घोरे चन्द्रमाः पञ्चभिर्ग्रहेः 4567. ग्रहेस्ततः पञ्चभिर्गुह्यसं-अपैरसूर्यैः सूचितभाग्यसंपदम् (पुत्रम्) Rāgh. 3, 13. R. 1, 19, 2. Varāh. Brh.